शौहर के हुकूक

संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

1] रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया जो औरत पांचो वकत की नमाज पढे और रमजान के रोज़े रखे और अपनी शर्मगाह की हिफाज़त करे और अपने शौहर की आज्ञापालन करे तो वो जन्नत के दरवाजो मेसे जिस दरवाज़े से चाहे दाखिल हो.

_मिश्कात की रिवायत का खुलासा | रावी अनस रदी.

2] रसूलुल्लाहﷺ से पूछा गया कि कौन सी बीवी सबसे बेहतर है? आपﷺ ने फरमाया कि वो बीवी जो अपने शौहर को खुश करे जबभी वो उसकी तरफ देखे, उसकी इताअत करे, और अपने माल के बारे में कोई ऐसा रवय्या ना अपनाए जो शौहर को नापसन्द हो.

अपने माल से मुराद वो माल है जो शौहर ने घर की मालिका की हैसियत से उसके हवाले कर दिया है.

_निसाई की रिवायत का खुलासा | रावी अबू हुरैरा रदी.

3] रसूलुल्लाहﷺ के पास एक औरत आई और हम आपﷺ के पास बैठे हुए थे, उसने कहा मेरे शौहर सफवान बिन मुअत्तिल रदी मुझे मारते है जबमें नमाज पढती हूं और मुझे रोज़ा तोडने के लिए कहते है जबभी में रोज़ा रखती हूं और वो फज़र की नमाज नहीं पढते जब तक्की सूरज नहीं निकल आता.

अबू सईद रदी फरमाते है कि सफवान रदी वही बैठे हुए थे, तो आपﷺ ने उनसे उनकी बीवी की शिकायत के बारे में पूछा तो उन्होने कहा ए अल्लाह के रसूल! नमाज पढने पर मारने की शिकायत की हकीकत येहे कि वो दो-दो सूरतें पढती है और में उसे मना करता हूं, तो आपﷺ ने फरमाया कि एक ही सूरत काफी है.

सफवान रदी ने फिर कहा कि रोज़ा तोडने की शिकायत की हकीकत येहे कि ये रोज़ा रखे चली जाती है और में जवान आदमी हूं सबर नहीं कर सकता है, तो आपﷺ ने फरमाया कोई औरत अपने शौहर की इजाज़त के बगैर रोज़ा नहीं रख

सकती.

उसके बाद उन्होने कहा कि सूरज निकलने के बाद नमाज पढने की बात येहे कि हम उस खानदान से संबंध रखते है जिसके लिए ए बात मशहूर है कि हम नहीं जाग सकते जब तक सूरज ना निकल आए, इस पर आपﷺ ने फरमाया कि ए सफवान! जब तुम जागो तो नमाज पढ लिया करो.

इस रिवायत से ये बातें जहीर होती है :

१] पतिओ को ये हुकूक नहीं है कि वो अपनी बिवीयों को फर्ज़ नमाज पढने से रोके, हा औरत के लिए ये जरूरी है कि वो शौहर की जरूरतो का खयाल रखे और दीनदारी के शौक में वो लम्बी लम्बी सूरतें ना पढे, रही नफील नमाज तो उसमे शौहर की जरूरतों का खयाल रखना जरूरी है बगैर उसकी इजाज़त के नफील नमाजो में ना लगे इसी तरह नफ्ली रोज़ा भी उसकी इजाज़त के बगैर ना रखे.

२] सफवान बिन मुअतिल रदी का हाल ये था कि वो रात को लोगों के खेतों में पानी देते थे, जाहिर है कि जब रात का

ज़्यादातर हिस्सा इस तरह की मेहनत मजदूरी में लग जाए तो आदमी ठीक वकत पर फज़र के लिए नहीं जाग सकता.

३] सफवान बिन मुअतिल रदी उंचे दर्ज़े के सहाबी है उनके बारे में ये नहीं कहा जा सकता कि वो फज़र की नमाज के बारे में बेपरवाही करते रहे, बल्की ऐसा इत्तिफाक से हो जाता होगा कि रात को देर में सोए और किसी ने जगाया नहीं और फज़र की नमाज कज़ा हो गई यही हालत थी जिस की वजह से आपﷺ ने फरमाया कि ए सफवान जब तुम नींद से उठो तो नमाज पढ लिया करो वरना अगर आप के नझदीक वो नमाज से बेपरवाही और गफलत करने वाले होते तो आप उन पर नाराज़ होते.

_अबू दाउद की रिवायत का खुलासा | रावी सईद खुदरी रदी.

4] असमा बिन्ते यजीद फरमाती है में अपनी कुछ हम उम्र लडकियो के साथ बैठी थी कि हमारे पास से रसूलुल्लाहﷺ गुज़रे, तो आपﷺ ने हमे सलाम किया और फरमाया तुम अच्छा व्यवहार करने वाले पतिओ की नाशुक्री से बचो और

फिर फरमाया तुम औरतों मेसे किसी का ए हाल होता है कि अपने माँ बाप के घर लम्बी मुद्दत तक कुंवारी बैठी रहती है.

फिर अल्लाह उसे शौहर देता है और उसे औलाद होती है, फिर किसी बात पर गुस्सा हो जाती है और शौहर से यु कहती है मुझको तुझसे कभी आराम ना मिला, तूने मेरे साथ कोई एहसान नहीं किया.

इस रिवायत में औरतों को नाशुक्री से बचने की तालीम दी गई है, ये बीमारी आमतौर से औरतों में पाई जाती है, इसलिये औरतों को इससे बचने की बहुत कोशिश करनी चाहिये.

_अल अदबुल मुफरद की रिवायत का खुलासा

5] रावी सौबान रदी फरमाते है कि हम रसूलुल्लाहﷺ के साथ सफर में थे कि आयत 'वल्लजीना यकनिज़ुनजहबा वल फिज्जता' नाजिल हुई तो हम मेसे कुछ ने कहा सोना चाँदी के जमा करने के सिलसिले में तो ए आयत उतरी जिससे मालूम हुवा कि उसको जमा करना पसन्दीदा नहीं

है, अगर हमे मालूम हो जाए कि कौन सा माल बेहतर है तो उसे जमा करने की सोचें. आपﷺ ने फरमाया सबसे बेहतर जखीरा अल्लाह को याद करने वाली जुबान और अल्लाह के शुकर से भरा हुवा दिल और नेक बीवी है जो दीन की राह पर चलने में शौहर की मददगार बनती है.

इस रिवायत से मालूम हुवा कि अल्लाह का ज़िकर जुबान से होना चाहिये और ज़िकर से मुराद वोही ज़िकर है जो शुकर के ज़ज्बे के साथ किया जाए और ए भी मालूम हुवा कि बीवी जो अपने दीनदार शौहर की तंगियो और सख्तियो में सबर के साथ रहती है दीन की राह पर चलने में सहारा बनती है, रास्ते का पत्थर नहीं बनती तो हकीकत में ऐसी बीवी अल्लाह की बहुत बडी नेमत है.

_तिरमेज़ी की रिवायत का खुलासा

6] रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया कि तुम्मे से हर एक निगरान और मुहाफिझ है और तुम्मे से हर एक से पूछा जाएंगा उन

लोगों के बारे में जो तुम्हारी निगरानी में होगे, अमीर भी निगरान है और उससे भी उसकी रियायत के बारे में पूछा जाएंगा और शौहर अपने घर वालों का निगरान है और औरत अपने शौहर के घर और उसके बच्चों की निगरान है, और नौकर अपने आका के माल का निगरान है तो तुम्मे से हर एक निगरान है और तुम्मे से हर एक से उन लोगों के बारे में पूछा जाएंगा जो उसकी निगरानी में दिये गये है.

इस रिवायत का ए टुकडा यहा खासतौर पर गौर करने के काबिल है कि औरत अपने शौहर के घर और उसके लडकों की निगरान है. ये रिवायत बताती है कि शौहर अपनी बीवी को सिर्फ खिलाने पिलाने ही का ज़िम्मेदार नहीं है उसके दीन व अखलाक की हिफाज़त और निगरानी भी उसके ज़िम्मे है और बीवी की ज़िम्मेदारी दुगनी है.

वो शौहर के घर और माल की निगरान तो है ही उसके बच्चों की तबियत की खास ज़िम्मेदारी भी उसपर है क्योकि शौहर तो रोज़ी हासिल करने के लिए ज़्यादातर बाहर रहता है और

घर में बच्चे अपनी माँओं ही से ज्यादा हिले मिले होते है इसलिये बच्चों की निगरानी और तालीम और तबियत की दोहरी ज़िम्मेदारी उनकी माँ पर आती है.

_बुखारी मुस्लीम की रिवायत का खुलासा | रावी इबने उमर रदी.